॥ श्रीसीतासर्वस्वस्तोत्रम् ॥

श्लोक १

सीता मे परमं ज्ञानं सीता मे परमं तपः।
सीता मे परमं ध्यानं सीता मे परमं धनम्॥

हिन्दी अनुवाद:

मेरे लिए सीताजी ही परम ज्ञान हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम तप हैं। मेरे लिए सीताजी ही परम ध्यान हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम धन हैं।

भावार्थ:

साधक के लिए ज्ञान, तप, ध्यान और सम्पत्ति का सर्वोच्च स्वरूप माता सीता में ही है। उनकी शरण में जाने से शाश्वत शांति और ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं।

श्लोक २

सीता मे परमाप्रीतिः सीता जाप्यं परं मम।
सीता मे परमं तीर्थं सीता मे परमं धनम्॥

हिन्दी अनुवाद:

मेरे लिए सीताजी ही परम प्रीति हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम जप्य (जपने योग्य नाम) हैं। मेरे लिए सीताजी ही परम तीर्थ हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम धन हैं।

भावार्थ:

सच्चे भक्त के लिए प्रेम, जप, तीर्थ और धन सभी का सार रूप माता सीता में ही मिलता है।

श्लोक ३

सीता मे परमा पूजा सीता मे दानदक्षिणा।
सीता मे परमा दीक्षा सीता मे परमं धनम्॥

हिन्दी अनुवाद:

मेरे लिए सीताजी ही परम पूजा हैं, सीताजी से ही दान-दक्षिणा है। मेरे लिए सीताजी ही परम दीक्षा हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम धन हैं।

भावार्थ:

माता सीता की भक्ति करते समय दान, पूजा, दीक्षा जैसे सभी कर्म सिद्ध हो जाते हैं।

श्लोक ४

सीता मे परमा श्रद्धा सीता मे परमा गतिः।
सीता मे परमा पूज्या सीता मे परमं धनम्॥

हिन्दी अनुवाद:
मेरे लिए सीताजी ही परम श्रद्धा हैं, सीताजी ही मेरी परम गति (अंतिम लक्ष्य) हैं। मेरे लिए सीताजी ही परम पूज्या हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम धन हैं।

भावार्थ:
श्रद्धा और मोक्ष का अंतिम रूप माता सीता में निहित है, वही परम पूज्या और आराध्या हैं।

श्लोक ५

सीता मे परमा विद्या सीता मे जननी परा।
सीता मे परमा भक्तिः सीता मे परमं धनम्॥

हिन्दी अनुवाद:

मेरे लिए सीताजी ही परम विद्या हैं, सीताजी ही मेरी परम माता हैं। मेरे लिए सीताजी ही परम भक्ति हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम धन हैं।

भावार्थ:

विद्या, भक्ति और मातृत्व सभी का श्रेष्ठ रूप सीताजी में प्राप्त होता है, जिससे साधक का जीवन पूर्ण होता है।

श्लोक ६

सीता सीताहि सर्वत्र पश्यामि च वदामि च।
सीता मे दिव्य सर्वस्वं सीता मे परमं धनम्॥

हिन्दी अनुवाद:

मैं सर्वत्र सीताजी को ही देखता हूं और सीताजी का ही नाम कहता

हूं। मेरे लिए सीताजी ही दिव्य सम्पूर्ण सर्वस्व हैं, सीताजी ही मेरे लिए परम धन हैं।

भावार्थ:
सच्चा भक्त हर स्थान में, हर कार्य में सीताजी को ही अनुभव करता है और सीताजी में ही उसकी सम्पूर्ण आस्था स्थिर रहती है।

श्लोक ७

सीता वेदे पुराणे च रामायणे च भारते।
सर्वत्र सीता सीता हि गीयते चानुमीयते॥

हिन्दी अनुवाद:
सीताजी का वर्णन वेदों में, पुराणों में, रामायण में और महाभारत में भी हुआ है। सर्वत्र सीताजी का ही गान होता है और सीताजी का ही स्मरण किया जाता है।

भावार्थ:
शास्त्रों और महाकाव्यों में सीताजी का गौरव, उनका आदर्श और उनका आशीर्वाद ही मानव जीवन का पथप्रदर्शक है।

श्लोक ८

सीतां विना न पश्यामि सच्चिदानन्द राघवम्।
सीता मे रमते चित्ते सीतारामात्मकं जगत्॥

हिन्दी अनुवाद:
मैं सीताजी के बिना सच्चिदानन्द स्वरूप श्रीराम को नहीं देखता। मेरे चित्त में सीताजी ही रमती हैं और सम्पूर्ण जगत् सीताराममय ही है।

भावार्थ:
सीताजी और रामजी एकत्व का प्रतीक हैं। सीताजी के बिना रामजी का दर्शन भी संभव नहीं, इसीलिए सीताजी में समर्पण होने से रामजी भी सुलभ होते हैं।

श्लोक ९

श्रीसीता सर्वस्व स्तोत्र यः पठेच्छृणुयादपि।
इहलोके परत्रे च स सुखी भाग्यवान् भवेत्॥

हिन्दी अनुवाद:

जो कोई इस श्रीसीतासर्वस्व स्तोत्र का पाठ या श्रवण करता है, वह इस लोक में और परलोक(साकेत लोक) में सुखी और भाग्यवान् होता है।

भावार्थ:

इस स्तोत्र का श्रद्धा से पाठ करने पर मनुष्य को सांसारिक और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है।

श्लोक १०

श्रीसीतारामीय श्रीमथुरादास निर्मितम्।
श्रीसीतासर्वस्वस्तोत्रं पाठान्निष्ठाप्रदं भवेत्॥

हिन्दी अनुवाद:

यह श्रीसीतासर्वस्वस्तोत्र श्रीसीतारामीय भक्त श्रीमथुरादास जी द्वारा रचित है। इस स्तोत्र का पाठ साधक में सीताजी के प्रति दृढ़ निष्ठा (स्थिरता) प्रदान करता है।